

परीक्षाविद्या के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

1. उत्तर प्रीतिका में मुख्य पृष्ठ अहित पाठों की कुल संख्या 32 है। यदि कोई पृष्ठ अन्तर हो या कम हो तो विद्यार्थकर्ता अधिकारी को अवसरा प्राप्त होते।
 2. उत्तर प्रीतिका के मुख्य पृष्ठ पर दिए गये निचितिक प्रश्न पर अपना अनुचरण करें।
 3. उत्तर प्रीतिका के मुख्य पृष्ठ के निम्नों भाग को खाली छोटे दोनों पृष्ठ से उत्तर प्रश्नों के उत्तर देने पर दिए गये निचितिक प्रश्न करें।
 4. शास्त्रियों/रेखाचित्रों/उत्तर का सचिन धर्म को घोषकर उत्तर दियने के लिए अपनी प्रयत्नता पालने नीली या खाली स्थानी के बाल फें पान की प्रयोग करें।
 5. परीक्षार्थी प्रश्न पर एवं अनुचरण के अलावा कुछ भी न लिखे एवं रफ़—कार्य न करें।
 6. परीक्षार्थी उत्तर प्रश्नों के उत्तर लिखने में दूसरी का धृप न करें। उत्तर लिखने के बाद ही इनका पृष्ठों को एक लिपिकी लाइन लीनकर निरक्षत कर दें।
 7. लिखित परीक्षा संभाल होने के पश्चात परीक्षार्थी गताधिप्रश्न में उत्तरप्रश्नों पर करने के पूर्व मुख्य पृष्ठ पर नीर गयी जागरूकताओं की सुन्दरता/गमानकावल/विषय/प्रश्न पर एवं प्रश्न पर का नाम आदि की जांच लाभर तर हों।
 8. परीक्षार्थी को पूरक उत्तरप्रश्नों पर नहीं की आवंगें।
 9. परीक्षार्थी परीक्षा संभाल के पश्चात, अगले दिन तक उत्तरप्रश्नों का सम्पर्कितात्मक मौजूदा रखें।
 10. परीक्षार्थी उत्तरप्रश्नों को प्रति व्यक्तिगतात्मक रूपे—भेद पर प्रोत्तिकर कर सकता है, किन्तु इसके पश्चात उत्तरप्रश्नों की इकठ्ठातापी गताधिप्रश्न में अधिकारीयता अपनी दृष्टि सामाजिक विवरणों की जाने वाली धृष्टि।

वे धृष्टान्वय करता/करती है कि इस उत्तरप्रश्नों में प्रश्नों के दूसरे दृष्टि सामाजिक विवरणों में विवरण विवरणों की जाने वाली धृष्टि।

卷之三

प्रदान करते विद्युत
संचार एवं विद्युत
गोट- विद्युतगति लकड़ी,
परिवासी के प्रेमा या मैं अकिञ्चित
उमा, अपापन गाय, गायांग उमा
विद्युत एवं प्रसन् पर या विद्युत कर
ही उत्तमाकार दें।

प्राचीन भारतीय संस्कृत

मैं प्रस्तुति करता हूँ कि यारे
पुरिका का मूल्यकन ऐसे होना
किया गया है एवं अंक भी ऐसे
दाय हो जायेगा है।

पर्याप्ति का विवरण—

कविता